विषयानुक्रमणिका

	पृष्ठ संख्या
पहला अध्याय **आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व** प्रस्तावना - जन्म एवं शिक्षा - वैवाहिक जीवन - व्यक्तित्व के विभिन्न पहलु - प्रेरणास्रोत - कृतित्व-निबंध -उपन्यास - इतिहास - आलोचना - कहानी -कविता - अनुवाद साहित्य - अप्रकाशित अनूदित रचनाएं - छायानुवाद - संपादन साहित्य - संपादित पत्र-पत्रिकाएं - जीवनी एवं संस्मरण – निष्कर्ष	1-36
दूसरा अध्याय **इतिहास - संस्कृति - मिथक - एक विश्लेषण** प्रस्तावना - इतिहास-अर्थ एवं परिभाषा - इतिहास के तत्व - संस्कृति - संस्कृति शब्द का अर्थ - व्युत्पति एवं परिभाषा - संस्कृति के स्वरूप - सभ्यता और संस्कृति - मिथक- अर्थ एवं परिभाषा - मिथक की उत्पति - मिथक निर्माण के बाह्य घटक - मिथक निर्माण के आतंरिक घटक – निष्कर्ष	37-63
तीसरा अध्याय **हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के कथा-साहित्य में इतिहास,संस्कृति एवं मिथक** प्रस्तावना – कथावस्तु – बाणभट्ट की आत्मकथा – चारुचन्द्रलेख – पुनर्नवा – अनामदास का पोथा – हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में इतिहास – बाणभट की अत्माकथा में ऐतिहासिक पात्र एवं अन्य पात्र – कथा की वास्तविकता से कल्पना का समन्वय – देशकाल-वातावरण चारुचद्रलेख – देशकाल एवं वातावरण – घटना , देश तथा क्षेत्र से सम्बन्ध – ऐतिहासिक पात्र एवं अन्य पात्र पुनर्नवा में ऐतिहासिक पात्र एवं अन्य पात्र – कथा की वास्तविकता से कल्पना का समन्वय – देशकाल एवं वातावरण अनामदास का पौथा में कथा की वास्तविकता से कल्पना का समन्वय – ऐतिहासिक पात्र एवं अन्य पात्र हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में संस्कृति – प्रस्तावना – बाणभट्ट की अतमकथा में संस्कार – वर्ण – धर्म चारुचन्द्रलेख में संस्कार – वर्ण – दर्शन	64-172

पुनर्नवा में संस्कार – वर्ण – दर्शन अनामदास का पौथा में इतिहास – दर्शन – संस्कार – वर्ण - धर्म हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में मिथक - बाणभट्ट की अतमकथा में नैतिक चेतना - सादृश्य- ऐतिहासिक घटनाएं - अनुष्ठान - कल्पनाशीलता – जिज्ञासावृत्ति चारुचन्द्रलेख में सादृश्य - ऐतिहासिक घटनाएं पुनर्नवा में सादृश्य - अनुष्ठान -जिज्ञासावृत्ति - भय तथा आनंद अनामदास का पौथा में नैतिक चेतना - सादृश्य-जिंजासवर्ती -अनुष्ठान - कल्पनाशीलता – निष्कर्ष	
चौथा अध्याय **हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के निबंधों में इतिहास, संस्कृति एवं मिथक** प्रस्तावना - हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के निबब्धों में इतिहास - आम फिर बौरा गए -अशोक के फूल - दीपावली-सामाजिक मंगलेच्छा का प्रतिमापर्व - वर्षा-घनपति से घनश्याम तक - ठाकुर की बटोर - प्रायश्चित की घडी - संस्कृतियों का संगम - हिमालय - वैशाली - हिन्दू संस्कृति के अध्ययन के उपादान - गुरु-शिष्य परंपरा - पुरानी पोथियां - भारतीय संस्कृति और हिंदी का प्राचीन साहित्य - भारतीय फलित ज्योतिष हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के निबंधों में संस्कृति - प्रस्तावना - धर्म और दर्शन - भारतीय संस्कृति की देन - देवदारु - गुरु-हिषय परंपरा शिरीष के फूल - कुटज - अशोक के पूल - दीपावली,समाचिक मंगलेच्छा का प्रतिमापर्व - आलोकपर्व की ज्योतिर्मयी देवी - सौंदर्य सृष्टि में प्रकृति की सहायता - वर्षा-घनपति से घनश्याम तक - जीवेम शरद शतम - ठाकुरजी की बटोर - प्राचीन भारत में मदनोत्सव - नाखून क्यों बढ़ते हैं - नववर्ष आ गया - मेरी जन्मभूमि - आम फिर बौरा गए आत्मदान का सन्देशवाहक-वसंत - आंतरिक शुचिता भी आवश्यक है - आपने मेरी रचना पढ़ी - भगवान महाकाल का कुंठ्नृत्तय - धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां - संस्कृतियों का संगम - हिमालय - वैशाली - भारत की ऐक्य साधना-साहित्य के क्षेत्र में - मध्यम मार्ग - भारतीय संस्कृति - भारतीय मेले - सभ्यता और संस्कृति - भारतीय संस्कृति का स्वरुप - वन्देमातरम - धार्मिक एवं सत्चरित्र नारी कुडुम्ब की शोभा है - ततः किम? - भारतीय साहित्य का मेरुदण्ड - तिलक का गीता दर्शन - राष्ट्रीय एकता के प्रतीक-शिव - हिन्दू संस्कृति के अध्ययन के उपादान - प्राचीन ज्योतिष - ज्योतिर्विज्ञान - भारतीय फलित ज्योतिष - स्वागत हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के निबंधों में मिथक - प्रस्तावना - देवदारु -	173-292

अशोक के फूल - दीपावली-सामाजिक मंगलेच्छा का प्रतिमा पर्व - वर्षा-घनपति से घनश्याम तक - प्राचीन भारत में मदनोतसव - घर जोड़ने की माया - आम फिर बौरा गए - वसंत आ गए है - भारतीय संस्कृति की देन - हिमालय - भारत की समन्वय साधना : धर्म और दर्शन के क्षेत्र में - भारतीय मेले - क्या निराश हुआ जाय - राष्ट्रीय एकता के प्रतीक-शिव - सर्वे पुंसां परोधर्म: - हिन्दू संस्कृति के अध्ययन के उपादान - समाज संस्कार पर विचार - भाव और भगवान - भारतीय संस्कृति और हिंदी का प्राचीन साहित्य - भीष्म को क्षमा नहीं किया गाया - भारतीय फलित ज्योतिष - भारत में ध्रुतक्रीड़ा - ज़िन्दगी और मौत के दस्तावेज –निष्कर्ष	
पाँचवाँ अध्याय **भाषा एवं शैली** प्रस्तावना – उपन्यासों की भाषा – निबन्धों की भाषा – काव्यमय भाषा का प्रयोग – भावानुकूल भाषा – साहित्यिक भाषा – चित्रभाषा एवं मूर्तता का प्रयोग – कल्पना का समावेश – मिश्रित भाषा – प्राचीन बोलचाल की भाषा – साधारण बोलचाल की भाषा – अनुप्रास ध्वनियों का प्रयोग – अलंकारों का प्रयोग - भाषा में रसो का प्रयोग – संस्कृत शब्दों का प्रयोग – अरबी-फ़ारसी शब्दों का प्रयोग – तदभव एवं देशज शब्दों का प्रयोग – सम्मान जनक शब्दों का प्रयोग – अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग – मुहावरे तथा लोकोक्तियों का प्रयोग शैली – उपन्यास की शैली – निबन्धों की शैली – निष्कर्ष	293-312
उपसंहार	313-324